IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 26, Issue 7, Series 1 (July. 2022) 68-70
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

जल संरक्षण का संकल्प "जल है तो कल है"।

–डॉ. श्रीमती सुशीला सांवरिया
सह–आचार्य–इतिहास
स्व. पंडित नवल किशोर शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय दौसा (राज.)

पर्यावरण किसी देश, समाज या वर्ग के अनेक आयामों से निर्मित्त होता है, उसकी शुद्धता व प्रदूषण प्राणी मात्र के जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है। पर्यावरण और जीवन का अटूट सम्बन्ध है। अतः इसके सरंक्षण, संवर्धन और विकास की अत्यधिक आवश्यकता है। पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए जागरूकता, राजनीतिक चेतना जाग्रत करना और आम जनता को इसके लिए प्रेरित करना अति आवश्यक है।

सृष्टि की संरचना जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु और आकाश पाँच तत्वों से मिलकर हुई है। इन सभी तत्वों में जल का महत्व अत्यधिक है। संसार के सभी जीवों व वनस्पति के लिए पानी की प्रथम आवश्यकता है। जल के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है।

प्राचीन काल में प्रकृति में घटने वाली प्रत्येक घटना को पूजनीय माना गया और उसकी पूजा की गई है। जल को देवता माना गया है तथा उसकी एक–एक बूंद का संचय व उपयोग बड़ी तत्परता से किया गया है। भारतीय नदियों की देवियों के रूप में पूजा की जाती है और उनको दूषित करना पाप माना गया है। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में जल की बर्बादी और फिजूलखर्ची नहीं करने पर जोर दिया गया है।

मनु स्मृति (4/121) में मनचाहे स्नान और व्यर्थ पानी बहाने की मनाही करते हुये कहा गया है कि भोजन के बाद, रोग के रहते, रात्रि में, बहुत से वस्त्र पहने होने पर और जहाँ–तहाँ स्नान करना अनुचित होता है। मनु ने अनेक स्थलों, जल स्त्रोतों, जलाशयों की सुरक्षा का निर्देश दिया है और यह आज्ञा दी है कि जो ऐसा नहीं करता है वह बस्ती में रहने योग्य नहीं है।

विष्णु धर्मसूत्र, पराशर स्मृति, नारद स्मृति में भी जलसंरक्षण के निर्देश दिये गये है।

भारतीय ज्योतिष में अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल व आकाश तत्वों के आधार पर राशिफल कथन के नियम भी दिये गये है तथा पानी की बर्बादी व संचय का प्रभाव राशियों पर स्पष्ट रूप से पड़ता है बताया गया है। राशियों के गुण धर्म के अनुसार जातकों को जल के प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना अति आवश्यक है। जल संरक्षण समय की मांग व सामाजिक आवश्यकता है। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में भी जल संरक्षण पर अत्यधिक बल दिया और नियम बनाये। उनका पालन न करने वाले को उचित दण्ड देने का विधान भी किया।

मानव सभ्यता सदियों से प्रकृति की गोद में फलती–फूलती रह है। जल प्राकृतिक द्वारा प्रदत्त अमूल्य धरोहर है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यतायें नदियों के किनारे ही विकसित हुई है। वह चाहे सिन्धु सभ्यता हो या चीन–मिस्त्र की सभ्यता हो। इसीलिये कहा गया है कि बहता पानी बढ़ता जीवन। मानव सभ्यता आज इतनी विकसित हो चुकी है कि इसके द्वारा जल के अंधाधुंध दोहन (उपयोग) से जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इससे सम्पूर्ण चराचर के अस्तित्व पर ही संकट आ गया है। इस भयावह स्थिति को ध्यान में रखते हुये लोगों को अपने दायित्व का निर्वाह करते हुये जल संरक्षण के विषय में सोचना होगा, क्योंकि जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते है। इसीलिये पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को बनाएं रखने के लिए जल का संरक्षण अति महत्वपूर्ण है।

जल संरक्षण से तात्पर्य है – जल का सुनिश्चित मात्रा में और अवशिष्ट जल को रिसाइक्लिंग करके उसका सदुपयोग करना तथा जल को दूषित होने से बचाना।

जल हमारे जीवन का आधार है, जल है तो कल है, जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जल पृथ्वी पर उपलब्ध एक अति महत्वपूर्ण संसाधन है। धरती का लगभग तीन–चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, परन्तु इसमें से केवल तीन प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है। संसार के सभी जीवों को जीवित रहने के लिए जल की प्रथम आवश्यकता होती है बिना जल के जीवन सम्भव नहीं है। जल सबसे महत्वपूर्ण पदार्थों में से एक है। विश्व के प्रत्येक जीव–जन्तु वनस्पति को इसकी जरूरत होती है।

प्रातः उठने से लेकर रात्रि विश्राम तक जल मुँह धोने, नहाने, वस्त्र धोने, भोजन पकाने आदि के काम आता है। जल ही हमारे शरीर को स्फूर्ति, स्वच्छता और दीर्घता प्रदान करता है। जल जगत के प्राणियों का जीवन आधार है। पशु, पक्षी, मानव सभी इससे जीवन पाते है। पेड़–पाधे जल की उपस्थिति में ही प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कर भोजन बनाते है। जल चक्र जीवन को विविध आयाम प्रदान कर शीतलता प्रदान करता है।

मनुष्य जल को विभिन्न कार्यों में उपयोग करता है जैसे इमारतों, नहरों, घाटों, पुलों, जल घरों, जल कुंडों, नदियों आदि का निर्माण तथा खाना बनाने, सफाई करने, गर्म पदार्थ को ठंडा करने, मछली पालन, सिंचाई आदि कार्यों में भी जल का ही उपयोग हाता है।

जल खेती के लिए अपरिहार्य है। जल के बिना उद्योग –धंधे चल नहीं सकते। उत्पादन नहीं हो सकता। बिना वर्षा जल के खेती करना असंभव है। जल कृषि, उद्योग–धंधे, व्यवसाय सभी का आधार है। जल के बिना किसी का भी अस्तित्व नहीं है। जल और जीवन जगत का गहरा सम्बंध होता है। जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। बिना जल के सबकुछ असम्भव है। जल समस्त जैव जगत का आधार है, पानी का ही सब संसार है। यदि पृथ्वी से जल का लोप हो जाये, तो समस्त प्राणी जीवन समाप्त हो जायेगा, हरियाली, वन सभी बंजर हो जायेंगे।

प्रकृति के द्वारा मानवता के लिए जल एक अनमोल उपहार है। जल की वजह से ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। जल के बिना जीवन विलुप्त हो जायेगा।

पृथ्वी पर जीवन का सबसे जरूरी स्त्रोत पानी है क्योंकि हमें जीवन के सभी कार्यों को निष्पादित करने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। पानी एक ऐसा जीवनदायी तरल है। जिसके स्पर्श से ही बीमार व्यक्ति भी उठ खड़ा हो जाता है और उसे नया जीवन मिल जाता है। पानी के बिना किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। यह प्रकृति द्वारा दिया गया उपहार है जिसका हमें सम्मान करना चाहिए।

वर्तमान समय में हमारी अनियंत्रित उन्नति के परिणाम स्वरूप वनों की कटाई, उद्योगों में जल की अंधाधुंध बर्बादी, कृषि के लिए भूमिगत जल का दोहन, स्वच्छ जल का प्रदूषित होना, वर्षा के जल का संचय नहीं कर पाना तथा दैनिक जीवन में जल का जरूरत से ज्यादा उपयोग होने के कारण जल संकट की समस्या उत्पन्न हो गई है। इसीलिये जल को संचित करने के लिए उचित कदम उठाना आवश्यक है। नदियों, तालाब, जलाशय तथा पानी के अन्य स्त्रोतों को दूषित होने से बचाना चाहिये, वनों की कटाई पर प्रतिबंध हो जिससे भारी मात्रा में जल वर्षा हो सके।

जल संरक्षण के उपाय–पानी की समस्या से निपटने का सबसे कारगर तरीका है रेनवाटर हार्वेस्टिंग, इसके अंतर्गत बरसात के पानी को व्यर्थ बहने से रोका जाएं और उसे छतों के जरिये इस तरह से संग्रहित किया जाएं कि उसका फिर से इस्तेमाल सम्भव हो सकें। ऐसा भूगर्भीय जल भण्डारों को भरकर बोरवेल, कुँओं को चार्ज करके या टैंक इत्यादि में पानी को एकत्रित कर किया जा सकता है।

हम भूजल का उपयोग करते है तो उसमें कम से कम उतना पानी तो पहुँचना ही चाहिये जितना हम दोहन कर रहे है और यह रेनवाटर हार्वेस्टिंग तकनीक से ही सम्भव है। जल संकट की समस्या से निपटने के लिए इसे अमल में लाना आवश्यक है। आज के हालात में यह न केवल जरूरी है बल्कि फायदेमंद भी है तथा वर्षा के जल की बर्बादी को रोककर उसका उपयोग किया जा सकता है।

इसके साथ ही जल संरक्षण के लिए आवश्यकता है–

1. नदी व तालाब जो पीने के पानी के स्त्रोत है में कल–कारखानों से निकलाअपशिष्ट तथा कूड़ा–कर्कट नहीं डाले।
2. आर.ओ. से निकलने वाले पानी को कपड़े धोने, बर्तन धोने व पौधों में डालना चाहिये।
3. खुले व टपकते नलों की समय पर मरम्मत करवानी चाहिये ताकि पानी की व्यर्थ बर्बादी को रोका जा सके।
4. जल संरक्षण के लिए हमें समाज के लोगों को जागृत करना चाहिए, जिससे जल के महत्व को समझा जा सके।
5. वर्षा के जल को संरक्षित करना चाहिये।
6. कारखानों को जलाशयों से दूर लगाया जाना चाहिये ताकि जल को दूषित होने से बचाया जा सके।
7. जल स्त्रोतों नदियों, तालाबों, कुँओं आदि की समय–समय पर सफाई होनी चाहिये।
8. सरकार को नियम बनाकर गंदे नालों व अपशिष्ट पदार्थों को नदी तालाबों में बहाने पर कठोरता से रोक लगानी चाहिये।
9. जल की सुरक्षा के लिये ग्लोबल वार्मिंग पर नियंत्रण भी आवश्यक है क्योंकि ग्लेशियर लगातार पिघलते जा रहे है जो पानी की सुरक्षा को लेकर एक चिन्ता का विषय है।

जल संरक्षण के लिए हमें अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है, हमें केवल अपने प्रतिदिन की गतिविधियों में कुछ सकारात्मक बदलाव करने की आवश्यकता है, जैसे –

1. नल खुला रखकर हाथ न धोएं।
2. नहाने में शावर के बजाएं बाल्टी का प्रयोग करें।
3. मंजन करते वक्त नल खुला न रखें।
4. फर्श की नल से धुलाई के बजाय पौंछा लगाएं।
5. मग में पानी लेकर दाढ़ी बनायें।
6. पाइप की बजाए बाल्टी में पानी लेकर कार धोयें।
7. शौचालय में फ्लश के बजाय छोटी बाल्टी काम में लें।
8. सब्जियों को सीधे नल के नीचे धोने बजाय, बर्तन में धोये।
9. पानी पीते समय गिलास को जूठा करने के बजाय उपर से पानी पीये ताकि गिलास को बार–बार धोने से बचा जा सके।

इन छोटे–छोटे उपायों के द्वारा हम जल की बचत कर सकते है। यदि समय रहते हमने जल समस्या का समाधान नहीं ढूंढा तो भविष्य का कड़वा सच पानी का महासंकट होगा और समभव है कि विश्व का तीसरा युद्ध पानी के लिए ही हो।

जल संरक्षण पर समय–समय पर श्लोगनों के द्वारा भी जनता को जागरूक करने का प्रयास किया गया है –

1. जल है, तो जीवन है।
2. जल है, तो कल है।
3. जमा किया जो बरसात का पानी, फैली चारों और हरियाली, खुशहाली
4. बुरे वक्त के लिए जैसे बचाते धन–राशि, वैसे ही बचाओ निर्मल पानी
5. पानी प्रकृति का है अनमोल उपहार, व्यर्थ बहाकर इसे मत करो बेकार

इन श्लोगनों के माध्यम से जल चेतना की जागृति लाने, जीवन में जल के महत्व को बताने का प्रयास किया गया है। जल हमारी पृथ्वी की अमूल्य धरोहर है। अगर हम इसका ध्यान नहीं रखेंगे तो पूरी पृथ्वी नष्ट हो जायेगी। जल बचाने के लिए सरकार के साथ–साथ हमें भी जागरूक होकर जल को बचाने का संकल्प लेना चाहिये क्योंकि –

''जल है तो जीवन है,
जीवन है तो पर्यावरण है,
पर्यावरण है तो धरती है,
इस धरती से हम सब है।''

संदर्भ :–

1. मनुस्मृति 4/121
2. पी.डी. शर्मा – पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण
3. डॉ. श्याम गुप्ता – पर्यावरण संरक्षण
4. दास, एम. 2007 – भारत में स्वच्छ जल अभियान
5. के.सी. सोनी – पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण